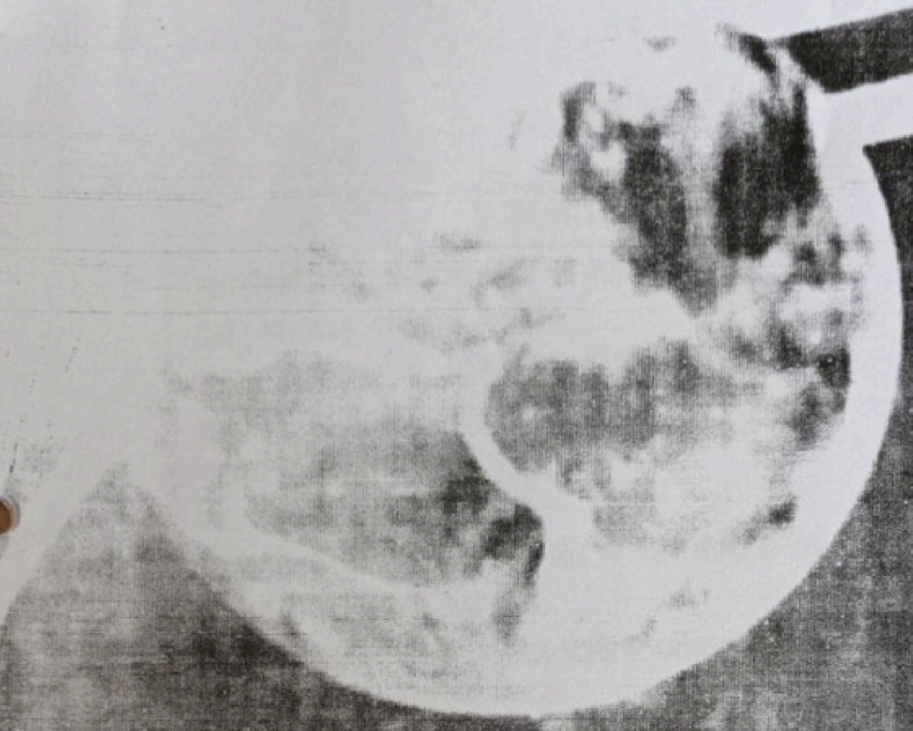

आधुनिक हिंदी कविता के विविध आयाम

- जनवादी कविता
- भूमंडलीकरण की कविता

[illegible] : डॉ. अनिल पाटील
प्रा. सुधाकर [illegible]

अनुक्रम

जनवादी कविता

1. साठोत्तरी हिंदी कविताओं में सामाजिक विमर्श 15
डॉ. भास्कर उमराव भवर

2. जनवादी चेतना के कवि : डॉ. चंद्रकान्त देवाताले 19
प्रा. डॉ. गजानन भोसले

3. जनवादी कविता (साठोत्तरी युग) 24
प्रा. निलम भोसले

4. जनवादी कवि 'धूमिल' के काव्य में राजनीतिक व्यंग्य 31
प्रा. संगीता विष्णु भोसले

5. 'सदियों का संताप' में चित्रित दलित जीवन की त्रासदी 'ठाकुर का कुआँ' 36
डॉ. देवीदास बोर्डे

6. नागार्जुन के काव्य में व्यंग्य 44
डॉ. साईनाथ विट्ठल चपळे

7. जनवादी कवि नागार्जुन : 'तुमने कहा था' कविता के सन्दर्भ में...... 48
प्रा. नंदू चव्हाण

8. मानवता मुक्ति का रौद्र स्वर 51
डॉ. सुनिल महादेव चव्हाण

9. नयी कविता के प्रतिमान 58
प्रा. डॉ. शिवाजी उत्तम चवरे

10. आधुनिक हिंदी कविता के विविध आयाम जनवादी कविता के विशेष संदर्भ में.. 62
प्रा. डॉ. प्रकाश शंकरराव चिकुर्डेकर,

11. जनमानस का व्यंग्य चित्रित करने वाले कवि नागार्जुन 68
प्रा. डॉ. संजय चोपड़े

12. जनकवि नागार्जुन एक संक्षिप्त मूल्यांकन 72
प्रा. नरेंद्र संदीपान फडतरे

13. धूमिल की जनवादी कविता 76
प्रा. डॉ. सुचिता जगन्नाथ गायकवाड

14. डॉ. सुशीला टाकभौरे की प्रतिनिधि कविताओं में स्त्रीवादी चेतना 82
श्री. अनिल सदाशिव करेकांबळे
प्रा. धनंजय शिवराम घुटुकडे

14

डॉ. सुशीला टाकभौरे की प्रतिनिधि कविताओं में स्त्रीवादी चेतना

श्री. अनिल सदाशिव कोकाटे
प्रा. धनंजय शिवराम घुटुकडे

आधुनिक लेखिका के रुप में पहचान बनानेवाली डॉ. सुशीला टाकभौरे का जन्म 04 मार्च, 1954 ई. को भानपुरा, मध्यप्रदेश में हुआ। उन्होंने कहानियाँ, नाटक, एकांकी तथा निबंध इन गद्य विधाओं में सक्षम लेखन किया है। गद्यसाहित्य के साथ उनके प्रकाशित हुए चार कविता संग्रहों ने उन्हें एक संवेदनशील कवयित्री के रूप में भी स्थापित किया है। उनके इन चार कविता संग्रहों की अधिकांश कविताओं में उनका स्त्रीवादी चिंतन मुखर उठा है। अतः प्रस्तुत शोधालेख में उनकी प्रतिनिधि कविताओं में व्यक्त स्त्रीवादी चिंतन पर प्रकाश डालने का प्रयास रहा है। 'स्त्रीवादी चिंतन' से तात्पर्य है, स्त्रीयों के प्रति सोचने, समझने, मनन करने की प्रवृत्ति। ''देवी, रानी, वेश्या, जनमानस या सामान्य नारी आदि विविध प्रकारों में समानेवाली स्त्रीयों का किसी भी समस्या या स्थिति को एक दृष्टिकोन से न देखकर भिन्न मानसिकताओं, दृष्टियों, संस्कारों और वैचारिक प्रतिबध्दताओं का समाहार करते हुए उलट–पुलट कर देखना उसे समग्रता में समझने की कोशिश करना स्त्रीवादी चिंतन हैं।''

आधुनिक कवयित्री डॉ. सुशीला टाकभौरे की प्रतिनिधि कविताओं उगते अंकुर की तरह जियो, पीड़ा की फसलें, लेकिन कब तक, घर की चौखट से बाहर, नहीं हारेगी कभी, स्त्री, गाली, मासूम भोली लडकी, आज की खुददार औरत, नमुना, मै तत्पर हूँ, खोज की बुनियाद आदि मे प्रमुख रुप से स्त्रीवादी चिंतन मुखर होता है। इन प्रतिनिधि कविताओं मे स्त्रीवादी चिंतन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर कवयित्री पूरी संवेदना और संघर्षात्मक रूप मे अपनी लेखणी उठाई है। इसमे बच्चों की परवरिश मे खटती नारी, नोकरपेशा नारी की समस्या, घरेलू हिंसा की शिकार और उसका विरोध, दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा, लिंग, वर्ण, जाति, धर्म के स्तर पर विरोध, समानता, आर्थिक शोषण, देह मुक्ति का प्रश्न, परिवार और समाज मे स्त्री की बदलती छवि, भेदभाव, यौन उत्पीडन आदि को प्रमुख बिंदुओं का अध्ययन किया है।

1. अपने हक के प्रति सजग – अपनी प्रतिनिधि कविताओं में सुशीला टाकभौरे ने स्त्रीयों को अपने अधिकारों के प्रति सजग किया है। 'उगते अंकुर की तरह जियो' कविता में उन्होंने उगते अंकुर को प्रतिकात्मक स्त्री के रूप में चित्रित किया है। उगता अंकुर जिस तरह धरती, आकाश, हवा, प्रकाश पर अपना हक जताता है। वह निर्जीव रहकर भी किसके वश में नहीं रहता। अपने अधिकार को प्राप्त करते हुए जमीन चीरकर लहलहाता है। तो तुम तो मनुष्य हो तो लाचार होकर क्यों जीती हो। अपनी आत्मनिर्भरता और स्वाभिमान के लिए अपने अधिकारों को हर हाल में हासिल करने की बात कवयित्री करती है। जैसे –

सुविधाओं से समझौता करके
कभी न सर झुकाओ
अपना ही हक माँगो
नयी पहचान बनाओ' ....'

2. अत्याचार तथा हिंसा के प्रति रोष – स्त्री अपनी मान मर्यादा को खूब जानती है. लेकिन इसका अर्थ यह नहीं वह असहाय है, डरपोक है, अबला है। उसपर होनेवाले अत्याचार, हिंसा वह कब तक सहेगी? जब उसकी सहनशीलता खत्म होगी तो वह रणचण्डिका का अवतार लेगी। कवयित्री ने भूकंप और ज्वालामुखी का प्रतीक के द्वारा नारी के विद्रोह की सहजता को स्पष्ट करती है। वे कहती है–

"धुंधलाती अधजली आग ज्वालामुखी होकर,
धरती–सी फूट पड़ती है,
लोग भूकम्प की बात को सहज मानते हैं,
स्त्री ज्वालामुखी हो सकती है, यह भी तो सहज बात है।" 2

3. भेदभाव – सदियों से भारत में पुरुषप्रधान मानसिकता के कारण पुरुषों ने स्त्री को दोयम स्थान दिया है। पुरुष अपनी गलती को तो नजरअंदाज करता है लेकिन स्त्री द्वारा गलती हो जाए तो वह उसे पापी या अपराधी घोषित करता है। पुरुषी अहंकार से देवी सीता को छुटकारा नहीं मिला तो आम स्त्री कैसे मुक्त हो सकती है? लेकिन कवयित्री ने स्त्रीयों का हौसला बढाने का कार्य किया है। वे कहती है कि

"वह धरती में नहीं, आकाश में जाना चाहती है,
देवकी की कन्या की तरह, बिजली–सी चमक कर संदेश देना चाहती है–
तुम्हारी कंसीय मानसिकता के अंत का हे राम ;
मानव–मानव के बीच भेदभाव करना बन्द करो,
बन्द करो शम्बूक का वध करना क्योंकि अब हम अपना सवेरा ढूँढ लेंगे।
हमने आँखों में सूरज भरना सीख लिया है।" 3

कवियत्री ने पुरुषों की कंसीय मानसिकता से उबरने के लिए स्त्रियों को बल दिया है।

4. पर्दा प्रथा – आज भी स्त्री को घर की शोभा कहा जाता है। उसका जीवन चार दीवारी के अंदर ही घूँट रहा है। पर्दा, घूँघट, बुरखा, घर का सम्मान,

मान–मर्यादा जैसे ढकोरालों के पीछे उसकी स्वतंत्रता पर ही पाबंदी डाली जाती है। पर्दा प्रथा आज भी समाज में मौजूद है। स्त्रीयों को आँख, कान, जिह्वा स्वातन्त्र है पर पाँव बन्धन है। उन्हें अपनी कुल की लाज के लिए घर की चौखट तक आजादी है, घर के बाहर सब मर्यादा ही मर्यादा। मायका हो या ससुराल वह दरवाजे के अंदर से ही सबकुछ देखती है। लेकिन सुशीला ने आनेवाली पीढ़ियों को इसका डटकर सामना करने का साहस बाँधा है। वे कहती है–

"आनेवाली पीढीयों को
बचाना होगा/रास्ता देना होगा
आगे बढकर/घर की चौखट से बाहर निकलना होगा।" 4

5. परिवार और समाज में बदलती छवि – जब स्त्री कभी लिखने या बोलने की कोशिश करती है तो वह सदा भयभीत–सी लगती है। वह सोचती है कि लिखते समय कलम को झुकाकर और बोलते समय बात को सँभालकर और समझने के लिए सबके दृष्टिकोन से देखे क्योंकि वह एक स्त्री है। उसीतरह कोई भी आदमी जब गाली देता है तो कुत्ता और कुतिया इनमें भी भेद करता है क्योंकि कुत्ता पुरुषप्रधान या पुल्लिंगी है और कुतिया स्त्रीलिंगी । ज्यादतर गाली में 'कुतिया' शब्द का प्रयोग होता है क्योंकि वह स्त्री के बराबर है। कुत्ता तो वफादार है लेकिन सोचा जाए तो कुत्ता और कुतिया दोनों एक ही जाति के है लेकिन उसमें भी भेद किया जाता है। कवियत्री ले 'गाली' इस कविता में इसका वर्णन किया है। जैसे–

"जब कुत्ता और कुतिया
एक दूसरे के पूरक हैं
तब/कुत्ते को वफादार
कहने के साथ ही
चरित्र के नाम पर
'कुतिया' गाली क्यों दी जाती है?" 5

6. समानता का प्रश्न – भले ही आज स्त्री को 50 फिसदी कानूनन आरक्षण देने पर जो दिया जा रहा है जिससे वह समता की भागीदार बने। आज की औरत खुद्दार बनी है, वह मर्दों के साथ बराबरी से काम करती है। सुशीला कहती है कि, अब तक बहुत सह लिया, आज तक बहुत मोमबत्तियाँ गल चुकी है, आज वह स्त्री जंगल की आग है बुझाए न बुझेगी। आज ये खुद्दार औरत नंगेपन पर उतरकर परमेश्वर को लजाएगी और [illegible] उसे नीचा दिखाएगी। साथ ही कवयित्री [illegible] को कहा है। वे उनका हौसला बढ़ाते [illegible]

"लडकी तुम किसी पर [illegible]
तुम्हारा अलग अस्तित्व [illegible]
तुम्हारी मंजिल बहुत आ[illegible]

भीड से अलग अपनी पहचान बनानी है और तुम्हे जूझना है,
आकाश को चूमना है" 6

7. **हार न मानना तथा सजग रहना –** समाज हमेशा से ही स्त्री को भोग की वस्तु मानते आया है। कितनी कन्याएँ तथा वृध्दाएँ अपनी बिरादरी तथा अपने घर परिवार के छोटे घेरे में रोजी रोटी तक ही सीमित हुई है और जीवनभर पिसती रहती है। वह अपने देश, समाज तथा खुद अपने से भी बेखबर रह जाती है। समय के साथ आज औरत सजग और सतर्क हुई है। उसकी हिम्मत बढती ही जा रही है। स्त्रियों मे मुखर उठी इस चेतना के संदर्भ में कवयित्री कहती है–

'पर अब वह सजग है/और सतर्क भी
कि कोई नहीं पाये उसके/बढते कदमों के रफतार
वह बदलेगी अब/सदियों की परिपाटी
नहीं हारेगी हिम्मत–
नहीं हारेगी कभी–
नहीं हारेगी! 7

निष्कर्ष

सुशीला टाकभौरे की उक्त प्रतिनिधि कविताओं का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि वे स्त्रीवादी कवियत्री है। उनकी ज्यादातर कविताओं में जो स्त्री विषयक संवेदना और सामाजिक विषमता के प्रति आक्रोश मुखर हुआ है वह उनकी स्वानुभूति का अंकन है। उनकी प्रतिनिधि कविताओं में समाज की आधी आबादी होने वाली स्त्री की ययार्थ स्थिति का बेबाक चित्रण आया है। स्त्रीयों की स्थिति, उनकी समस्याओं का उल्लेख मात्र करना उनका मकसद नहीं बल्कि स्त्री को उसकी ताकत से परिचित करना भी उनकी इन प्रमुख कविताओं का उद्देश्य रहा है। इसकारण उनकी उक्त प्रतिनिधि कविताओं में स्त्रीवादी चेतना का स्वर अत्र–तत्र गँजता है। स्त्रीयों को उनके अधिकारों से परिचित करके उनमें सजगता निर्माण करने में वाकई यह कविताएँ सफल हुई है।

संदर्भ

(googleweblight.com सुशीला टाकभौर – कविता कोश)
1. सुशीला टाकभौरे की कविता– उगते अंकुर की तरह जियो
2. सुशीला टाकभौरे की कविता– लेकिन कब तक?
3. सुशीला टाकभौरे की कविता– पीडा की फसलें
4. सुशीला टाकभौरे की कविता– घर की चौखट से बाहर
5. सुशीला टाकभौरे की कविता– गाली
6. सुशीला टाकभौरे की कविता– आज की खुद्दार औरत
7. सुशीला टाकभौरे की कविता– नहीं हारेगी कभी

भा. वि. बयाबाई
महाविद्या